प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) सिक्कों का अध्ययन .....के अन्तर्गत किया जाता है।

(ii) गौतम बुद्ध के बचपन का नाम ..... था।

(iii) .....के समय धारा नगरी शिक्षा और साहित्य का प्रमुख केन्द्र था।

(iv) खिलजी वंश का संस्थापक.....था।

(v) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष.....थे।

Fill in the blanks.

(i) The study of coins is done under the…….

(ii) In his childhood the name of Gautam Buddha was…….

(iii) Dhara Nagari was the main centre of education and literature during the period of …….

(iv) The founder of Khilji dynasty was……..

(v) First President of India National Congress was…….

प्रश्न 2. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) जैन साहित्य की रचना पालि भाषा में हुई है।

(ii) शैव धर्म का एक सम्प्रदाय कापालिक तथा अघोरी है।

(iii) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण चौहान राजाओं ने करवाया था।

(iv) अमीर खुसरो एवं जियाउद्दीन बर्नी सल्तनत काल के प्रमुख विद्वान एवं लेखक है।

(v) चौरा–चोरी कांड भारत छोड़ो आन्दोलन से संबंधित है।

Write true or false.

(i) Jain religion literature are written in Pali language.

(ii) One branch of Shairism is Kapalic and Aghori.

(iii) The temple of Khajuraho were built by Kings of Chauhan.

(iv) Amir Khusaro and Ziyauddin are famous writers of sultunat period.

(v) Chaura-Chori incident in related with quit India Movement.

प्रश्न 3. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ी बनाइये –

	अ	–	ब
(अ)	भीम बेटिका	–	नमक कानून भंग
(ब)	पंच महाव्रत	–	पार्श्व नार्थ
(स)	हेमचन्द्र	–	रक्त एवं लोह नीति
(द)	बलवन	–	जयसिंह का दरबारी
(इ)	6 अप्रैल 1930	–	म.प्र. के रायसेन जिले में
		–	जैन धर्म
		–	सीधी कार्यवाही दिवस

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

	A	-	B
(a)	Bheem Betika	-	Breach of salt law
(b)	Panch Mahavrat	-	Parshvanarth
(c)	Hemchandra	-	Policy of blood and iron
(d)	Balwan	-	Courtier of Jai Singh
(e)	6^{th} April 1930	-	In the Raisen District of M.P.
		-	Jain Religion
		-	Direct Action Day.

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

1. वैदिक काल में सोने के कार्य करने वाले को कहा जाता था?
2. चोल काल में ब्राम्हणों को दान में दिये गये ग्रामों को कहा गया है?
3. 'अगस्त क्रांति हिंसा व अहिंसा का अद्‌भूत मिश्रण थी।' यह कथन किसका है?
4. भरहुत का स्तूप मध्यप्रदेश के किस जिले मे स्थित है?
5. अकबर ने इबादत खाने का निर्माण कहां कराया था?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. By what name a person who made gold items was called.

2. By what name the villages donated to Brahmian were called.
3. August revolution is the mixture of violence and non violence". Who quoted it.
4. The Stupa of Bharhut is situated is which district of Madhya Pradesh.
5. Where the Ibadat Khan was constructed by Akabar.

प्रश्न 5. सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) विष्णु की शेषषायी मूर्ति है–

(i) देवगढ़ के दशावतार मंदिर में (ii) सांची में

(iii) भरहुत में (iv) इन्द्रगद में

(ब) एरण (सागर जिला) किस नदी के तट पर स्थित है।

(i) बीना (ii) हाफ

(iii) नर्मदा (iv) केन

(स) शाहजी भौसले थे –

(i) शिवाजी के मंत्री (ii) शिवाजी के पिता

(iii) शिवाजी के सूबेदार (iv) शिवाजी के सेनापति

(द) रानी अवन्ति बाई का संबंध किस रियासत से था –

(i) ग्वालियर (ii) गड़ामण्ड़ला

(iii) रामगढ़ (iv) झांसी

(इ) विदिशा को प्राचीन काल में जाना जाता था –

(i) बेस नगर (ii) इन्द्रपुर

(iii) भरहुत (iv) आदम जद

Choose the correct answer in the following.

(a) The Sheshshai statue of Vishnu is.

(i) In the Dashavtar temple of deogarh (ii) In Sanchi

(iii) In Bharhut (iv) In Indragarh

(b) Airan (Sagar District) is situated on the bank of which river.

(i) Bina (ii) Haf

(iii) Narmada (iv) Ken

(c) Shahji Bhosale was.

(i) Shivaji's Minister (ii) Father of Shivaji

(iii) Subedar of Shivaji (iv) The cheif millitent of Shivaji

(d) Rani Avantibai was associated by which state.

(i) Gwalior (ii) Garh Mandala

(iii) Ramgarh (iv) Jhansi

(e) Vidisha was known is ancient peirod as.

(i) Base Nagar (ii) Indrapur

(iii) Bharhut (iv) Adamgarh

प्रश्न 6. हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना व्यवस्था को संक्षेप में लिखिए?

Write in short the town planning of the Harappan People.

अथवा

Or

वैदिक कालीन वर्ण व्यवस्था का उल्लेख कीजिए?

Write about the Varnna System of Vedic Period.

प्रश्न 7. सम्राट अशोक ने जनता की भलाई के लिये कौन–कौन से तरीके अपनाये?

Which system weres adopted by king Ashok for the welfare of people.

अथवा

Or

गांधार कला शैली की प्रमुख विशेषताये लिखिये?

State the main characteristic of Gandhar Art Style.

प्रश्न 8. गुप्त काल में हुये विज्ञान के विकास का वर्णन कीजिए?

State the development of science during the Gupta period.

अथवा

Or

सम्राट अशोक की कलिंग विजय का उल्लेख कीजिए तथा उसके परिणामों की व्याख्या कीजिए।

Mention the Kalinga Victory of Ashok. Explain its results also.

प्रश्न 9. खजुराहों के मंदिरों की कलात्मक विशेषताओं को लिखिए?

State the artistic features of temples of Khajuraho.

अथवा

Or

राजपूत कालीन समाज में स्त्रियों की दशा कैसी थी?

State the condition of women in Rajput age.

प्रश्न 10. अकबर की धार्मिक समन्वय की नीति की व्याख्या कीजिए।

अथवा

Or

हल्दी घाटी के युद्ध को संक्षेप में लिखिए?

Mention in brief the battle of Haldi Ghati.

प्रश्न 11. शिवाजी के समय मुगलों व मराठों के संबंध कैसे रहे?

How was the relation between Mughals and Marathas during the period of Shivaji.

अथवा

Or

शिवाजी की सैन्य व्यवस्था का उल्लेख कीजिए?

State the military system of Shivaji.

प्रश्न 12. भारत में पुर्तगाली शक्ति के पतन के कोई चार कारण लिखिए?

Mention any four causes of downfall of Portuguese.

अथवा

Or

बक्सर के युद्ध का महत्व समझाइये?

Explain the importance of the battle of Buxor.

प्रश्न 13. प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के लिये सिक्कों के महत्व को समझाइये?

Explain the importance of coins in knowing ancient Indian history.

अथवा

Or

नव पाषाण काल की किन्हीं पांच विशेषताओं की विवेचना कीजिए?

Describe any five characteristic of Neolithic age.

प्रश्न 14. सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन के उदय के कोई पांच कारण लिखिए?

Write any five causes for rise of Bhakti Movement during Sultnate period.

अथवा

Or

रजिया के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए?

Evaluate the character of Raziya Sultana.

प्रश्न 15. मुगल साम्राज्य के पतन के किन्ही पांच कारणों की विवेचना कीजिए?

Describe any five causes for decline of Moguls.

अथवा

Or

अकबर के दीन–ए–इलाही धर्म के विषय में आप क्या जानते है? इस धर्म के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए?

What do you know about the Din-e-Ilahi of Akabar. Mention its principles also.

प्रश्न 16. शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए?

Evaluate the character and works of Shivaji.

अथवा

Or

शिवाजी और अफजल खां के मध्य हुए संघर्ष का वर्णन कीजिए?

Describe the conflict between the Shivaji and Afzal Khan.

प्रश्न 17. ईश्वर चन्द्र विद्या सागर द्वारा सुधारक के रूप में किये गये कार्यों का उल्लेख कीजिए?

Mention the works of Ishwar Chandra Vidhya Sagar as a social reformer.

अथवा

Or

''राजा राम मोहन राय एक समाज सुधारक थे'' स्पष्ट कीजिए।

"Raja Ram Mohan Roy was a great social reformer" Explain.

प्रश्न 18. 1857 की क्रांति के क्या परिणाम हुऐ? समझाइये।

Explain the consequences of 1857 Revolt.

अथवा

Or

19वीं सदी के भारत के पुर्नजागरण के किन्हीं पांच कारणों की व्याख्या कीजिए?

Explain any five causes of the Indian Renaissance in 19^{th} century.

प्रश्न 19. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मध्य प्रदेश के योगदान के विषय में लिखिए।

State the contribution of Madhya Pradesh in the first fight of freedom.

अथवा

Or

मध्यप्रदेश में प्राप्त गुप्त कालीन प्रमुख स्मारकों के नाम एवं किन्हीं तीन स्मारकों का वर्णन कीजिए?

Name and describe any three Monuments of Gupta Period in Madhya Pradesh.

प्रश्न 20. आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष में अंग्रेजों की सफलता के क्या कारण थे? वर्णन कीजिए?

Describe the causes of success of English in Anglo French conflict.

अथवा

Or

प्लासी के युद्ध के प्रमुख कारणों का वर्णन कीजिए?

Describe the main causes of battle of Plassey.

प्रश्न 21. असहयोग आन्दोलन के कारणों एवं परिणामों की विवेचना कीजिए?

Discuss the causes and results of Non Co-operation Movement.

अथवा

Or

भारत छोड़ों आन्दोलन की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए?

Describe the causes of failure of Quit India Movement.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर –

उत्तर 1. रिक्त स्थान –

(i) मुद्रा शास्त्र

(ii) सिद्धार्थ

(iii) भोज

(iv) जलालुद्दीन खिलजी

(v) ब्योमेश चन्द्र बनर्जी

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सत्य/असत्य –

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सही जोडियां –

	अ	–	**ब**
(अ)	भीम बेटिका	–	म.प्र. के रायसेन जिले में
(ब)	पंच महाव्रत	–	जैन धर्म
(स)	हेमचन्द्र	–	जयसिंह का दरबारी

(द) बलवन – रक्त एवं लोह नीति

(इ) 6 अप्रैल 1930 – नमक कानून भंग

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर –

(1) वैदिक काल में सोने के कार्य करने वाले को स्वर्णकार कहा जाता था।

(2) चोल काल में ब्राम्हणों को दान में दिये गये ग्रामों को ब्रम्हादेय अथवा मंगलम् कहा जाता था।

(3) 'अगस्त क्रांति हिंसा व अहिंसा का अद्भुत मिश्रण थी' यह कथन ईश्वरी प्रसाद ने कहा था।

(4) भरहुत का स्तूप मध्यप्रदेश के सतना जिले में स्थित है।

(5) अकबर ने इबादत खाने का निर्माण फतेहपुर सीकरी में करवाया था।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सही विकल्प का चयन –

(अ) देवगढ़ के दशावतार मंदिर में

(ब) बीना

(स) शिवाजी के पिता

(द) रामगढ़

(इ) बेसनगर (भेलसा)

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई से पता चलता है कि सिन्धु सभ्यता एक नगरीय व्यवस्था थी। सिन्धु सभ्यता में नगर एक निश्चित योजना के अनुसार बनाये जाते थे। नगरों में चौड़ी–चौड़ी सड़कें पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाती थी, जो प्रायः एक–दूसरे को समकोण पर काटती थी। इस प्रकार प्रत्येक नगर अनेक खण्डों में अर्थात मुहल्लों में बांटा जाता था।

प्रमुख सड़कों से गलियां निकलती थी, जो एक से दो मीटर चौड़ी होती थी। मोहन जोदड़ो में एक 11 मीटर सड़क भी थी जो संभवतः राजमार्ग रही होगी।

नगरों में जल निकासी की समुचित व्यवस्था होती थी सड़कों के किनारे नालियां होती थी, जो पक्की व ढंकी हुई होती थी।

सिन्धु सभ्यता में नगरों में मकान पक्की ईटों के होते थे, मकान में रोशनदान, स्नानागार, रसोई घर, आंगन व कुएं होते थे। अतः सिन्धु सभ्यता के अवशेषों से स्पष्ट होता है कि सिन्धु सभ्यता के लोग नगर योजना में अत्यंत कुशल थे।

4 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2+2=4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का अस्तित्व था। इसमें विद्वानों में परस्पर मतभेद है। किन्तु पुरूष सूक्त को आधार मानकर ये प्रमाणित किया गया है कि समाज में वर्ण व्यवस्था थी।

ऋग्वैदिक काल में जाति प्रथा थी तो निश्चित रूप से ये जन्म पर नहीं वरन कर्म पर आधारित थी किन्तु उत्तर वैदिक काल में जाति जन्म पर आधारित होकर पैतृक हो गई। इस प्रकार जो धर्म की व्यवस्था जानते थे ब्राम्हण कहलाये इस प्रकार युद्ध में रत रहने वाले व राजनीति में अधिकार रखने वाले क्षत्रिय कहलाये। शेष सारी जनता वैश्य कहलायी जिसमें व्यवसायी एवं कृषक थे। इस व्यवस्था का निम्नतम वर्ग शूद्र था उनका काम शेष तीनों वर्णों की सेवा करना था। इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में समाज चार वर्णों – ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र मे विभाजित हो गया।

वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था पर संक्षिप्त में लिखने पर 2 अंक एवं चारों वर्णों की व्याख्या करने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7.

1. अशोक ने मनुष्यों और पशुओं के लिये अलग–अलग चिकित्सालयों की स्थापना करवाई थी।
2. अशोक ने सड़कों के दोनों किनारों पर छायादार वृक्ष लगवाये ताकि लोगों को यात्रा में कष्ट न हो।
3. मौर्यकाल में औषधियों की अत्यधिक कमी थी अतः अशोक ने जड़ी बूटियों के पेड़ लगवाये तथा स्थान–स्थान पर आवश्यकतानुसार दवाईयां बंटवाने का प्रबंध किया।
4. अशोक ने अनाथों, विधवाओं, वृद्धों तथा असहायों को मुक्त हस्त से दान दिया तथा राज्य कर्मचारियों को आदेश दे रखा था कि वे प्रजा के साथ अच्छा व्यवहार करें।

4 अंक

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं की व्याख्या करने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

गान्धार कला का भारतीय कला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इस कला का चीन, जापान और मध्य एशिया की कला पर भी प्रभाव पड़ा। कुछ इतिहासकार इसे ग्रीको बुद्धिस्ट आर्ट भी कहते है।

इस कला की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित है :–

1. भारी मात्रा में बुद्ध की मूर्तियां बनी व शरीर संरचना का विशेष ध्यान रखा गया।
2. वस्त्रों को सजीव बनाने का प्रयास किया गया।
3. इस कला में ग्रीक तकनीकी का भारतीय विचारों में प्रयोग किया गया।
4. इस कला में मूर्तियों का चमकदार बनाने में विशेष ध्यान दिया गया। इस कला में सबसे पहले योगीश्वर बुद्ध की मर्ति बनाई गई।

जटाधारी और प्रभामंडल युक्त मूर्तियों का निर्माण भी गांधार कला में हुआ। काले और भूरे रंग के पत्थरों का प्रयोग इस कला की विशेषता थी तथा गांधार तक्षशिला और अफगानिस्तान इस कला के प्रमुख केन्द्र थे।

गांधार कला की संक्षिप्त व्याख्या पर 1 अंक एवं उपर्युक्त कोई 3 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर 3 अंक 1+3 कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. गुप्त काल में विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई थी। गुप्त काल में अंक गणित, रेखाचित्र, बीज गणित, चिकित्सा शास्त्र एवं ज्योतिष विज्ञान आदि उन्नति की पराकाष्टा पर थे।

शून्य के सिद्धांत पर प्रतिपादन और दशमलव प्रणाली के विकास का इसी युग के महान वैज्ञानिकों को है। आर्य भट्ट प्रथम भारतीय नक्षत्र वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ थे। इन्होंने गणित विषय के अपने ग्रंथ 'आर्य भट्टीयम' में अंक गणित और बीज गणित के अनेक सूत्र और सिद्धांत प्रतिपादित किये। नक्षत्र के क्षेत्र में उन्होंने प्रमाणित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा पृथ्वी व सूर्य के मध्य चन्द्रमा आ जाने से ग्रहण होता है।

इस काल के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य और धातु विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान वराहमिहिर थे उन्होंने अपनी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना वृहत्संहिता में नक्षत्र विद्या, वनस्पतिशास्त्र, प्राकृतिक इतिहास तथा भौतिक भूगोल आदि विषयों का विशद विवेचन किया है।

धातु विज्ञान के क्षेत्र में प्रत्यक्ष प्रमाण दिल्ली के समीप महरौली में कुतुबमीनार के पास स्थित लोह स्तम्भ है जिसका निर्माण गुप्त काल में हुआ है।

गुप्त काल में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन ने ये प्रमाणित किया था कि सोना, चांदी, तांबा आदि खनिज पदार्थों के रासायनिक प्रयोगों से रोगो का निवारण किया जा सकता है।

4 अंक

गुप्तकाल में विज्ञान एवं तकनीकी के अंगों के नाम लिखने पर 2 अंक एवं विस्तार देने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कलिंग राज्य नंद काल में मगध साम्राज्य का ही एक भाग था। अशोक के काल में कलिंग एक शक्तिशाली राज्य था। कलिंग राज्य की निरंतर बढ़ती शक्ति मौर्य साम्राज्य के लिये एक संकट व चुनौती बनती जा रही थी। अतः अशोक ने अपने राज्य अभिषेक के आठवें वर्ष पश्चात अर्थात 261 ई.पू. में कलिंग पर आक्रमण कर दिया। कलिंग के शासक ने बड़ी वीरता से अशोक की सेना का सामना किया, परंतु अंत में विजय अशोक की हुई।

परिणाम–

इस युद्ध में 100000 सैनिक मारे गये तथा 150000 सैनिक युद्ध बन्दी बनाये गये। इस युद्ध में हुये भीषण नर संहार तथा रक्त रंजित दशा को देखकर अशोक का ह्रदय द्रवित हो गया तथा परिणाम युद्ध करने की नीति को सदा के लिये त्याग दिया तथा दिग्विजिय के स्थान पर 'धम्म' विजय की नीति को अपनाया। अन्य शब्दों में कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक आक्रमण कारी राजा के स्थान पर एक दयालु तथा धार्मिक सम्राट बन गया।

कलिंग विजय पर लिखने पर 2 अंक उपरोक्तानुसार परिणाम लिखने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. मध्यप्रदेश में छतरपुर के समीप स्थित खजुराहों के मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों के शासनकाल में हुआ था। खजुराहों में लगभग 30 मंदिर है ये सभी मंदिर कला की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक तथा उच्च कोटि के है। खजुराहों में जैनियों, शैवो तथा वैष्णवों के अनेक मंदिर बनवाये थे। इन मंदिरों में शिव, ब्रम्हा, विष्णु, सूर्य, जगदम्बा, जैन तीर्थकर शांतिनाथ तथा पार्श्वनाथ के मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। इन मंदिरों में शिव जी तथा महादेव का मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन मंदिरों की ऊंचाई 116 फुट है। इसके तीन मंडपों पर गुम्बद है।

श्री बी.एल. लूणिया के अनुसार – ''खजुराहों के प्रत्येक मंदिर भीतरी और बाहरी दीवारों पर विभिन्न देवी देवाओं की मूर्तियों, नाग, सिंह विविध क्रीडाओं की भाव भंगिमाओं से रत सुन्दरियों, काम–क्रीडारत अप्सरायें आदि उत्कीर्ण करने में शिल्पियों ने अपनी अलौकिक प्रतिभा और कला का परिचय दिया।''

4 अंक

खजुराहों के मंदिर कहां स्थित है लिखने पर 1 अंक एवं विशेषताएं विस्तार से लिखने पर 3 अंक 1+3 कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

राजपूत कालीन समाज में स्त्रियों का सम्मान और आदर होता था। पत्नि और माता के रूप में उनके प्रति श्रद्धा भक्ति और सम्मान होता था। इस काल में पर्दा प्रथा के दृढ़ प्रमाण नहीं मिलते है परंतु इस काल में सती प्रथा का अधिक प्रचार था।

इस काल में साधारण और निम्न श्रेणी की महिलाओं में आचार विचार का स्तर गिरने लगा था। राजपूत काल में कन्याओं की शिक्षा राज परिवारों व धनी परिवारों तक ही सीमित थी। उन्हें प्रायः संगीत, नृत्य, चित्रकला व साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। राज परिवारों की कन्याओं को अस्त्र शस्त्र व घुड़सवारी की शिक्षा भी दी जाती थी। राजपूत कन्याओं के विवाह प्रायः यौवनावस्था के पूर्व कर दिये जाते थे। विवाह के पश्चात वधू से अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने पति की हर प्रकार से सेवा करें। इस काल में विधवाओं की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी।

उपर्युक्त वर्णन करने पर 2+2= 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. समाज में धार्मिक समन्वय के लिये किये गये अकबर के कार्यों का वर्णन निम्नांकित है :–

1. बलपूर्वक मुसलमान बनाने की प्रथा का अंत।

2. जजिया कर की समाप्ति।
3. तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति।
4. इबादत खाने की स्थापना।
5. आचरण और व्यवहार में उदारता।
6. दीन–ए–इलाही धर्म की स्थापना।

(कोई चार बिन्दुओं का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है)

1. बलपूर्वक मुसलमान बनाने की प्रथा का अंत :– अकबर के पूर्व के मुस्लिम सुल्तान, हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बना लेते थे परंतु अकबर ने इस प्रथा का अंत कर सभी को अपने अपने धर्मों का पालन करने की स्वतंत्रता प्रदान की।
2. जजिया कर की समाप्ति :– अकबर ने पूर्व के मुस्लिम सुल्तान द्वारा हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया जाता था और उसे कठोरता से वसूल किया जाता था। अकबर ने इस कर को (जजिया कर) समाप्त कर दिया था।
3. तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति :– अकबर के पूर्व के सुल्तान हिन्दुओं से तीर्थ यात्रा भी वसूल करते थे। अकबर ने इस कर को भी वसूल कर दिया था।
4. दीन–ए–इलाही धर्म की स्थापना :– इबादत खाने में होने वाली समस्त समन्वयकारी धार्मिक चर्चाओं को व्यवहारिक रूप देने के लिये अकबर ने दीन–ए.–एलाही धर्म की स्थापना की। इस धर्म में समस्त धर्मों के श्रेष्ठ सिद्धांतों का समन्वय किया गया था।

4 अंक

धार्मिक समन्वय के किये गये कार्यों के नाम उपर्युक्तानुसार लिखने पर 2 अंक एवं कोई चार बिन्दुओं को विस्तार दिये जाने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

हल्दी घाटी का ऐतिहासिक युद्ध मुगल सम्राट अकबर के सेनापति मानसिंह और मेवाड़ के महाराणा प्रताप के बीच हल्दी घाटी के मैदान में 18 जून सन् 1576

ई. को हुआ। इस युद्ध में राणा प्रताप के नेतृत्व में राजपूतों ने अभूतपूर्ण वीरता का प्रदर्शन किया। किन्तु अंत में वे पराजित हुए और मुगल विजयी हुए लेकिन राणा प्रताप किसी तरह भाग गये और मुगलों के हाथ नहीं आये। इसके पश्चात राणा प्रताप जीवन पर्यन्त जंगलों में भटकते रहे किन्तु उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

हल्दी घाटी के युद्ध का मध्यकालीन इतिहास में अत्यधिक महत्व है। महाराणा प्रताप के पराजित होने के बावजूद भी इस युद्ध ने उन्हें अमर बना दिया। हल्दी घाटी के युद्ध में मुगल सेना को अत्यधिक कष्ट उठाने पड़े। अकबरके अथक प्रयासों के बावजूद भी राणा प्रताप ने मरते दम तक अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 2+2=4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. शिवाजी के काल में मुगलों और मराठों के संबंध अत्यंत तनावपूर्ण तथा संघर्षमय रहे। इसका प्रमुख कारण था औरंगजेब की हिन्दु धर्म विरोधी नीति। औरंगजेब ने हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाया, अनेक मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा तथा जजिया कर लगाया। औरंगजेब की इन नीतियों ने मराठों के प्रति विद्रोह की भावना भर दी। 1656 ई. में शिवाजी ने अहमद नगर और चुनार पर आक्रमण कर पहली बार गुगलों से टक्कर ली, उस समय दक्षिण का सूबेदार औरंगजेब था। औरंगजेब ने प्रत्युत्तर में मराठाों के गांवों का विध्सवंस करना प्रारंभ किया। परंतु उत्तराधिकार युद्ध के कारण उसे उत्तर भारत जाना पड़ा। इसका लाभ शिवाजी ने उठाया और साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। बादशाह बनने के बाद औरंगजेब ने मराठा शक्ति को कुचलने के लिए शाइस्ता खां को भेजा, शिवाजी ने इसे भी पराजित किया। इसके बाद जयसिंह मुगलों की ओर से शिवाजी से टक्कर लेने आया। पूरन्दर की संधि से मुगल मराठों मे समझौता हुआ जो स्थायी नहीं रहा। दीर्घकाल तक शिवाजी और औरंगजेब का

संघर्ष चलता रहा तथा शिवाजी की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र शम्भाजी ने भी संघर्ष जारी रखा।

4 अंक

उपर्युक्त वर्णन किये जाने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

शिवाजी उच्च कोटि के सेनापति थे, उनका बड़ा सुव्यवस्थित सैन संगठन था। शिवाजी की शक्ति का प्रधान स्त्रोत उनकी सेना थी। अपनी सैनिक शक्ति के बल पर ही उन्होंने विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। शिवाजी ने केवल लड़ने के उद्देश्य से एक विशाल मराठी सेना संगठित की थी। उनकी सैन्य व्यवस्था विभिन्न अंगों में विभाजित थी, उनकी सैन्य व्यवस्था के विभिन्न अंग निम्नांकित थे–

1. अश्वारोही सेना।
2. पैदल सेना।
3. जल सेना।
4. अंगरक्षकों की सेना।
5. तोप खाना।

सैन्य व्यवस्था – शिवाजी सेना के संगठन में विशेष रूचि लेते थे। वे सैनिकों की भर्ती, घोड़ों की खरीददारी अस्त्र–शस्त्र तथा किलों के निर्माण में विशेष रूप से ध्यान देते थे। शिवाजी की सैन्य व्यवस्था में किलों का विशेष महत्व था। किलों में ही युद्ध काल में लोग सुरक्षित रखे जाते थे। इस उत्तम व्यवस्था के कारण ही शिवाजी के सैनिक अभियान सफल होते थै।

उपर्युक्त सैन्य व्यवस्था के नाम एवं अन्य नाम लिखने पर 2 अंक एवं सैन्य व्यवस्था का उल्लेख करने पर 2 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के निम्न कारण थे :–

1. **धार्मिक असहिष्णुता :–** भारत में पुर्तगालियों का व्यापार स्थापित होते ही उन्होंने धार्मिक असहिष्णुता का परिचय दिया। उन्होंने हिन्दुओं व मुसलमानों को जबरन ईसाई बनाना प्रारंभ कर दिया। जिससे लोगों की सहानुभूमि उनके प्रति समाप्त हो गई और पतन का एक कारण बनी।
2. **व्यापारियों के हितों के विरूद्ध कार्य** :– पुर्तगालियों ने अपने व्यापारिक हितों के लिये सभी प्रकार अनैतिक कार्यों को किया जिससे विदेशी राजा और जनता उनकी विरोधी हो गई।
3. **ब्राजील को बसाने पर ध्यान :–** नव दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील की खोज की गई तो पुर्तगालियों का सारा ध्यान उसको बसाने में लगा। इससे पूर्वी देशों में उन्होंने कम दिलचस्पी ली। फलस्वरूप पूर्वी देशों पर से उनकी पकड़ ढ़ीली पड़ गई।
4. **निर्बल सैनिक शक्ति** :– पुर्तगालियों की नौ सैनिक शक्ति डच एवं इंग्लैण्ड आदि के मुकाबले कमजोर थी जो उनके पतन का कारण बनी।

4 अंक

उपर्युक्त कारण के अतिरिक्त भी कोई चार कारण पर 2 अंक एवं 4 को विस्तार देने पर ½ अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

बक्सर के युद्ध का राजनीतिक दृष्टि से विशेष महत्व है। प्लासी के युद्ध ने यदि अंग्रेजों को भारत में पैर जमाने का अवसर दिया तो बक्सर के युद्ध ने उन्हें अपनी गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा को विकसित करने का अवसर दिया। प्लासी की सफलता ने तो केवल बंगाल में ही अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित किया था परंतु बक्सर के युद्ध के कारण अंग्रेज उत्तरी भारत की भी एक महत्वपूर्ण शक्ति बन गये। शक्तिशाली अवध प्रान्त भी कंपनी के नियंत्रण मे आ गया, जिसके फलस्वरूप कंपनी को पश्चिम की ओर भी अपने प्रसार का अवसर मिला।

कंपनी व्यापारिक संस्था से एक राजनीतिक संस्था बन गई। इस युद्ध ने अंग्रेजों की सैनिक श्रेष्ठता को भी सिद्ध कर दिया।

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. प्राचीन भारतीय सिक्के ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

1. **आर्थिक दशा का ज्ञान :–** यदि सिक्के शुद्ध सोने या चांदी के होते है तो उनमें राज्य की सम्पन्नता का बोध होता है और यदि वे मिश्रित धातु के होते थे तो राज्य की विपन्नता का बोध होता है।
2. **तिथिक्रम का निर्धारण :–** सिक्कों पर अंकित तिथि से उन सिक्कों को चलाने वाले शासक की तिथि का ज्ञान होता है।
3. **साम्राज्य की सीमाओं का निर्धारण :–** सिक्कों के प्राप्त होने के स्थानों के आधार पर इतिहासकारों को शासकों के साम्राज्य की सीमाओं का निर्धारण करना सरल हो जाता है।
4. **धार्मिक दशा का ज्ञान :–** सिक्कों पर अंकित विभिन्न देवी देवताओं के चित्रों से तत्कालीन धार्मिक दशा का ज्ञान होता है।
5. **कला विकास का ज्ञान** :– सिक्कों पर उत्कीर्ण मूर्तियों चित्रों तथा संगीत बाधों से कला तथा संगीत के विकास का ज्ञान होता है।

5 अंक

उपरोक्तानुसार प्रत्येक बिन्दु को विस्तार देते हुए लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे (एक बिन्दु पर 1 अंक)।

अथवा

इस काल के मानव जीवन की प्रमुख विशेषताएं थी :–

1. **औजार** :– इस युग तक आते–आते मानव ने अपने औजारों को घिसकर चिकना व तेज करना सीख लिया था। इस युग का महत्वपूर्ण औजार पत्थर की कुल्हाड़ी, हंसिया, तीर–कमान आदि औजार थे।

2. **कृषि :–** इस युग में मानव कृषि करने लगा था। इस काल में मुख्य फसलें गेहूं, जौ, बाजरा, फल, शांक और कपास थी व मानव ने हल का आविष्कार कर लिया था।
3. **पशुपालन :–** इस काल में मानव पशुओं को पालने लगा था। वह गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी तथा अन्य अनेक पशुओं को पालने लगा था।
4. **भोजन** :– इस काल का मानव का मुख्य भोजन मांस, फल–फूल, अनाज तथा दूध था। इस काल में मनुष्य ने अनाज पीसने के पत्थर के टुकड़ों का प्रयोग करना भी सीख लिया था।
5. **पहिये का आविष्कार :–** पहिये का आविष्कार इस काल के मानव की महान देन थी। सबसे पहले मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये चाक का आविष्कार किया फिर गाड़ी खींचने के पहिये व पहियेदार गाड़ी का भी निर्माण होने लगा।

उपरोक्तानुसार विशेषताएं एवं अन्य विशेषताएं लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. भक्ति आन्दोलन के निम्नलिखित कारण है :–

1. **हिन्दू धर्म का जटिल होना** :– सल्तनत काल में हिन्दु धर्म का स्वरूप अत्यंत जटिल हो गया था। याज्ञिक कर्मकाण्ड, पूजा पाठ, उपवास आदि धार्मिक क्रियाओं की जटिलता और कठिनता को सर्वसाधारण जनता सरलता से निभा नहीं पाती थी, परंतु भक्ति मार्ग अत्यंत सरल तथा जटिलता से रहित था अतः उसे जनता ने विशेष पसन्द किया।
2. **लम्बी पराधीनता :–** सल्तनत काल में हिन्दु अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता को खो चुके थे तथा दीर्घ कालीन परतंत्रता ने उन्हें निराश कर दिया था। मानसिक तनाव से मुक्ति प्राप्त करने के लिये हिन्दु भगवान की भक्ति में लीन हो गये।

3. **मंदिरों और मूर्तियों का विनाश :–** सल्तनत काल में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हिन्दुओं के मंदिरों और मूर्तियों का विनाश कर दिया था। ऐसी स्थिति में वे भक्ति और उपासना के माध्यम से ही मोक्ष प्राप्त करने लगे।
4. **जाति–व्यवस्था का जटिल होना :–** सल्तनत काल तक हिन्दुओं की जाति व्यवस्था का स्वरूप जटिल हो चुका था। उच्च जातियां अपने को श्रेष्ठ समझकर निम्न जातियों पर अत्याचार करती थी। निम्न जातियों में असंतोष था। परंतु भक्ति आन्दोलन ने सबके लिए मार्ग खोल दिया। इस आन्दोलन के संचालक उंच–नीच की भावना के विरूद्ध थे।
5. **समन्वय की भावना –** दीर्घकाल तक हिन्दू और मुसलमान परस्पर निकट रहे जिससे उन्हें एक–दूसरे की भलाइयों और बुराईयों को समझने का अवसर मिला।

5 अंक

उपरोक्तानुसार कारण एवं अन्य भी कारण लिखने पर प्रत्येक कारण पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

रजिया के चरित्र का मूल्यांकन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है:–

1. **प्रथम तथा अंतिम सुल्तान :–** रजिया भारत की प्रथम तथा अंतिम मुस्लिम नारी सुल्तान थी। विदेशों में रजिया के पूर्व भी स्त्रियां सिंहासन पर बैठ चुकी थी। परंतु भारत में राजसिंहासन पर बैठने का सौभाग्य तथा गौरव सर्वप्रथम रजिया को ही प्राप्त हुआ।
2. **स्त्री होकर भी पुरूष की गरिमा :–** रजिया दरबार में पुरूष की पोशाक पहनकर आती थी। रजिया ने पर्दे का परित्याग कर दिया व दरबार मे बैठकर फरियाद सुनने लगी। दरबार के सभी विभागों की देखभाल करती थी।

3. **योग्य सेनापति :–** रजिया में उच्चकोटि की सैनिक योग्यता थी। उसमें संगठन की अद्‌भुत क्षमता थी। अपने शासन के प्रारंभिक काल में वह सभी विद्रोहियों का दमन करने में सफल हुई।
4. **निर्भीक एवं कुशल शासिका :–** रजिया अत्यंत योग्य तथा प्रतिभा संपन्न स्त्री थी। रजिया एक निर्भीक शासिका थी। हर समस्याओं का समाधान कुशलता से करती थी। तुर्क अमीरों से नफरत करती थी।
5. **सफल कूटनीतिज्ञ** :– रजिया में सफल कूटनीतिज्ञ के गुण विद्यमान थे। अनेक अवसरों पर उसने कूटनीति का सहारा लेकर अपने को बचाया, अपने विरोधियों में फूट डाली।

उपरोक्तानुसार बिन्दुवार मूल्यांकन किये जाने पर 5 अंक एवं बिन्दुओं को विस्तार देने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 15. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण निम्नानुसार है :–

1. **निरंकुश तथा केन्द्रीयभूत शासन :–** मुगल कालीन शासक व्यवस्था पूर्णतया निरंकुश तथा केन्द्रीय भूत थी। केन्द्रीयभूत शासन में शासन की समस्त शक्तियां सम्राट के हाथों में केन्द्रित रहती थी ऐसी शासन व्यवस्था उस समय की दृढ़ रहती है जबकि सम्राट योग्य तथा कुशल हो। औरंगजेब के बाद के शासक अपने पूर्वजों की भांति योग्य तथा कुशल नहीं थे अतः वे साम्राज्य को सुरक्षित तथा संगठित नहीं रख सके।
2. **औरंगजेब की धार्मिक नीति** :– अकबर ने जिस धार्मिक सहिष्णुता तथा सुलह कुल की नीति को अपनाया था उसे औरंगजेब ने पूर्णतया त्याग दिया था तथा उसने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया तथा बलपूर्वक हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयास किया था। उसकी इस धार्मिक नीति के कारण हिन्दु तथा सिक्ख मुगल साम्राज्य के विरोधी हो गये। साथ ही बुन्देला, जाटो, मराठो, राजपूतों आदि ने मुगल साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह कर दिया था।

3. **साम्राज्य की विशालता :–** औरंगजेब के शासन काल तक मुगल साम्राज्य इतना विशाल हो गया था कि उस पर व्यवस्थित ढंग से शासन करना तथा शांति की व्यवस्था करना एक जटिल समस्या थी।
4. **औरंगजेब के अयोग्य उत्तराधिकारी :–** औरंगजेब के समस्त उत्तराधिकारी अयोग्य थे। वे सब नाम मात्र के सम्राट थे। वे परस्पर अपनी समस्याओं में ही उलझे रहते थे तथा शासन की सुरक्षा की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते थे।
5. **औरंगजेब की दक्षिण की नीति :–** औरंगजेब की दक्षिण की नीति भी मुगल साम्राज्य के पतन का कारण सिद्ध हुई। उसने अपने शासन के 25 वर्ष दक्षिण में संघर्ष करने में ही व्यतीत किये। परिणाम स्वरूप वह उत्तर भारत की ओर ध्यान नहीं दे पाया जिससे स्थान स्थान पर विद्रोह होने लगे और मुगल साम्राज्य खोखला हो गया तथा पतन की ओर अग्रसर हुआ।

5 अंक

उपरोक्तानुसार 5 कारण एवं अन्य भी कोई 5 कारण लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

अकबर एक धर्म सहिष्णु था। उसने धर्म के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किया और विभिन्न धर्मों की अच्छाईयों को लेकर 1582 ई. में एक नवीन धर्म की स्थापना की जो दीन–ए–इलाही धर्म के नाम से जाना गया। दीन–ए–इलाही धर्म के प्रमुख सिद्धांत अथवा विशेषताएं निम्नलिखित थी :–

1. ईश्वर एक है, तथा अकबर उसका पैगम्बर व नेता है। दीन–ए–इलाही का अनुयायी बनने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को अकबर से दीक्षा लेना आवश्यक था।
2. सभी सदस्यों को अकबर को साष्टांग प्रणाम करना आवश्यक था।
3. प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिवस पर भोज का आयोजन करता था।
4. इसके अनुयायियों के लिये मांस खाना निषेध था।

5. इस धर्म को रविवार के दिन ही स्वीकार किया जाता था।
6. दाढ़ी रखना प्रतिबन्धित था।
7. दान व उदारता का पालन करना आवश्यक था।
8. जीवों से विमुक्ति व ईश्वर से लगाव।
9. अनुयायियों को उसकी इच्छानुसार जलाया या दफन किया जा सकता था।

दीन–ए–इलाही के विषय में संक्षिप्त लिखने पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार 8 बिन्दुओं को लिखने पर 1+4 कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 16. शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन निम्नांकित बिन्दुओं में वर्णित किया जा सकता है।

शिवाजी का चरित्रः–

1. **आदर्श तथा उच्च व्यक्तित्व** :– शिवाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा उच्चकोटि का था। वे राष्ट्र भक्त, धर्मात्मा, राष्ट्र निर्माता तथा एक कुशल प्रशासक थे। शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला अत्यधिक प्रभावित हो जाता था।
2. **उज्जवल चरित्र** :– शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था। वे शत्रु की पत्नि को भी मां, बहन के समान समझते थे। प्रो. एस.के. पगारे के अनुसार – ''उन्होंने कभी भी कामुकता और वासनात्मक भावुकता का परिचय नहीं दिया। जब कभी उन्हें सुन्दर स्त्रियां प्रस्तुत की गई उन्होंने सम्मान उनके घर भेट, उपहार सहित भिजवा दिया।'' शिवाजी के इन गुणों से ही उन्हें अत्यधिक जनप्रिय बना दिया था।

शिवाजी के कार्यों का मूल्यांकन :–

1. **महान संगठन कर्ता** :– शिवाजी एक महान संगठन कर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया था।

2. **महान सेना नायक :–** शिवाजी एक महान कुशल सेना नायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता के साथ करते थे। उनकी छापा मार रणनीति ने मुगलों को अस्त व्यस्त कर दिया था।
3. **कुशल प्रशासक :–** शिवाजी एक कुशल प्रशासक तथा सेना नायक थे। वे केवल एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेताहीन थे वरन अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक भी थे। शिवाजी के शासन काल में राजकीय पदों पर वंश परम्परा के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर नियुक्ति की जाती थी।

5 अंक

शिवाजी के चरित्र पर 2 अंक, कार्यों के मूल्यांकन पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति बीजापुर राज्य के लिये बड़ी चिन्ता का विषय था। मुहम्मद आदिलशाह की विधवा बेगम ने शिवाजी के विरूद्ध आक्रमण की योजना बनाने का निश्चय किया। उसने अफजल खां को शिवाजी के विरूद्ध युद्ध करने हेतु चुना। अक्टूबर 1659 ई. तक अफजल खां तथा शिवाजी दोनों ही एक दूसरे के आमने सामने आ गये। शिवाजी तथा अफजल खां दोनों ही ऐसी स्थिति में आ गए थे कि वे खुल्लम–खुल्ला युद्ध नहीं कर सकते थे।

अतः ऐसी परिस्थितियों में दोनों ने समझौता करना उचित समझा। समझौता के लिये भेट का दिन 10 नवम्बर 1959 ई. नियत किया गया। कहा जाता है कि मिलन के समय जब दोनों ने एक दूसरे का आलिंगन किया तभी अफजल ने शिवाजी पर वार कर दिया परंतु शिवाजी पहले सेही तैयार थे। उन्होंने अपना बघनखा अफलज खां के पेट में घुसैड़ दी और अपनी कटार उसके शरीर में भौंक दी। इस प्रकार अफजल खां का अन्त हो गया। अतः अफजल खां की सेना घबरा गई और उसे पराजय का मुह देखना पड़ा।

उपरोक्तानुसार युद्ध का वर्णन किये जाने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 17. समाज सुधार के क्षेत्र में ईश्वर चन्द्र विद्या सागर का महत्वपूर्ण योगदान था। उनका विचार था कि स्त्रियों को परम्परागत रूढ़ियों तथा सामाजिक कुप्रथाओं से मुक्त करने के लिये उन्हें शिक्षित करना परम आवश्यक है। ईश्वर चन्द्र ने भारत के नव निर्माण में अनेक उल्लेखनीय कार्य किये। उन्होंने संस्कृत के अध्ययन की नई तकनीक निर्मित तथा संस्कृत महाविद्यालय में गैर ब्राम्हणों को भी प्रवेश दिया। ईश्वरचन्द्र को भारत में नारी उत्थान के नाम पर याद किया जाता है।

अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये 1857 तथा 1858 के मध्य लड़कियों के 35 स्कूलों की स्थापना की। ईश्वरचन्द्र विद्या सागर ने विधवा विवाह का दृढ़ता से समर्थन किया। उनके प्रयासों के परिणाम स्वरूप 1856 ई. में ब्रिटिश प्रशासन ने विधवा पुर्नविवाह अधिनियम को पारित कर दिया था। ईश्वर चन्द विद्या सागर ने बहुविवाह तथा बाल विवाह का भी व्यापक विरोध किया। बहुविवाह हिन्दु धर्म तथा शास्त्रों के विरूद्ध एक दूषित परम्परा है।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. **कुलीन प्रथा का अंत :–** राजाराम मोहन राय और उनके द्वारा संचालित संस्था ब्रम्ह समाज ने भारतीय समाज में फैले कुलीनता और भिन्नता का भेदभाव का प्रबल विरोध किया।
2. **बहुविवाह एवं बाल विवाह प्रथा का विरोध** :– राजा राम मोहन राय ने भारतीय समाज में फैली बहुविवाह तथा बाल विवाह की कुरीति का भी सशक्त विरोध किया।
3. **विधवा विवाह का समर्थन** :– राजा राम मोहन राय ने भी विधवा विवाह का प्रबल समर्थन किया।

4. **सती प्रथा का विरोध :–** राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा का विरोध कर उसे अमानवीय तथा गैर कानूनी घोषित करवाया।
5. **सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों का खंडन :–** इन्होंने सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों का खंडन कर उन्हें परिमार्जित कर स्वरूप प्रदान करने पर बल दिया।

उपरोक्तानुसार विस्तार दिये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 18. **सन् 1857 की क्रांति के परिणाम :–** सन् 1857 ईस्वी का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इसके दूरग्रामी परिणाम निकले :–

1. **कंपनी के शासन का अंत :–** विद्रोह के कारण ब्रिटिश सरकार ने कंपनी के बार–बार विरोध करने के बावजूद कंपनी के शासन का अंत कर दिया। भारत के अच्छे शासन के लिए 1857 ई. में भारत शासन अधिनियम पारित हुआ और भारत का शासन सीधे ब्रिटिश क्राउन के हाथ में चला गया।
2. **भारतीय सेना का पुनर्गठन** :– विद्रोह के परिणाम स्वरूप सेना का पुनर्गठन हुआ। भारतीय सैनिकों की संख्या घटा दी गई। महत्वपूर्ण स्थानों पर सैनिक (अंग्रेजों के) रखे गये। उच्च सैनिक पद भारतीयों के लिए बन्द कर दिए गए।
3. **अंग्रेजों के प्रति कटुता :–** 1857 ई. की क्रांति के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों तथा भारतीयों में पारस्परिक कटुता तथा घृणा की भावना इतनी बढ़ गई कि वे एक दूसरे के निकट संपर्क में नहीं आ सके।
4. **प्रतिक्रियावादी तत्व सक्रिय** :– ब्रिटिश व्यापारिक नीति के फलस्वरूप देश के अधिकांश उद्योग धन्धों नष्ट हो चुके थे। नई शिक्षा पद्धति के कारण बेरोजगारी की समस्या बढ़ने लगी। सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी जिससे नैतिक पतन तथा संघर्ष बढ़ा। इस प्रकार समाज में अनेक प्रतिक्रियावादी तत्व सक्रिया हो गए।

5. **भारतीयों को लाभ :–** इस क्रांति के अनेक दुष्परिणाम निकले। इस क्रांति के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत की आन्तरिक दशा को सुधारने की ओर ध्यान दिया।

क्रांति की विफलता से भारतीयों को अपनी भूल का अहसास हुआ। यह स्पष्ट हो गया कि कोई क्रांति राष्ट्रीयता के अभाव में सफल नहीं हो सकती। अतः 1857 ई. की क्रांति से भारतीयों को राष्ट्रीयता के आधार पर संगठित कर एकमत होने की प्रेरणा मिली तथा इसी भावना के आधार पर राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठ भूमि तैयार की गई।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं कोई अन्य कारण लिखने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

19वीं सदी में भारत में पुर्नजागरण के कारण :–

1. **पाश्चात्य संस्कृति एवं शिक्षा का प्रभाव :–** अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण भारतीय पाश्चात्य, सभ्यता एवं संस्कृति के संपर्क में आए। इस सम्पर्क के फलस्वरूप भारतीयों के राष्ट्रीय सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में नई चेतना आई।
2. **ईसाई मिशनरियों का प्रभाव :–** सन् 1813 ई. के पश्चात भारत में ईसाई पादरी बड़ी संख्या में आने लगे। उन्होंने भारतीय धर्मों का मजाक उड़ाकर यहां ईसाई धर्म की स्थापना का प्रयत्न करने लगे फलतः भारत में ईसाई धर्म तेजी से फैलने लगा।
3. **भारतीय प्रेस समाचार पत्रों और साहित्य का योगदान :–** समाचार पत्रों ने जनसाधारण का ध्यान भारतीयों की दुर्दशा और ब्रिटिश सरकार द्वारा उनके शोषण की ओर आकर्षिक किया। समाचार पत्र और साहित्य भारतीयों को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। भारतीयों को अपनी दुर्दशा का आभाष हुआ और अब वे उनके उन्मूलन के लिए प्रयत्नशील हो गए।

4. **धर्म सुधारकों का प्रभाव :–** 19वीं सदी में भारत में अनेक ऐसे धर्म सुधारकों एवं उपासकों का जन्म हुआ जिन्होंने अपनी वाणी एवं विचारधारा से भारतीय जनता को जाग्रत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।
5. **दरिद्रता, भूखमरी और बेरोजगारी में वृद्धि :–** अंग्रेजो की शोषण की प्रवृत्ति और आयात निर्यात की दूषित नीति से देश में दरिद्रता, भूखमरी और बेरोजगारी में खूब वृद्धि हुई, इससे आर्थिक जीवन जर्जरित हो गया और नवीन आर्थिक समस्याओं का उत्कर्ष हुआ।

भारतीय समाज की कुरीतियों को दूर करने का बीज समाज सुधारकों ने उठाया। इस समाज सुधारकों में राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 5 अंक प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 19. **1857 की क्रांति में मध्यप्रदेश का योगदान :–** म.प्र. के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियां 1857 की क्रांति से ही प्रारंभ है। 1857 की क्रांति का प्रारंभ मध्यप्रदेश में महाकौशल क्षेत्र से उस समय हुआ जबकि एक भारतीय सैनिक ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर प्राणघातक हमला किया था। इसके पश्चात इस क्रांति का प्रारंभ ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद आदि में भी हुआ। म.प्र. में 1857 की क्रांति में प्रमुख योगदान देने वाले क्रांतिकारी थे – तात्याटोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्ती बाई, राणा बख्तावर सिंह, शहीद नारायण सिंह तथा ठाकुर रणपाल सिंह आदि। 1857 के क्रांतिकारियों में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे के नाम विशेष उल्लेखनीय है। रानी लक्ष्मीबाई ने देशभक्त विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सैनिकों को भयभीत कर दिया। झांसी हाथ से निकल जाने पर लक्ष्मीबाई अपने साथी तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार करने में सफल हुई। उन्होंने बड़े उत्साह से ग्वालियर की जनता को जाग्रत किया। ब्रिटिश सेना ने उनके किले को घेर लिया वे बड़े ही उत्साह से अपनी सेना का

संचालन करती हुई युद्ध क्षेत्र में आगे बढ़ी परंतु ब्रिटिश सेना के आघात से वे घायल हुई तथा उनका स्वर्गवास हो गया। उनके सामने ही तात्या टोपे ने म.प्र. के अनेक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया परंतु एक विश्वासघाती षड़यंत्र के कारण अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी बनाकर फांसी पर चढ़ा दिया।

1857 की क्रांति संपूर्ण भारत में असफल हो गई थी। अतः म.प्र. में उसे सफलता नहीं मिली परंतु यह भी सत्य है कि म.प्र. में इस क्रांति की व्यापकता ने यहां की राष्ट्रीयता की भावना को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

म.प्र. में प्राप्त गुप्तकालीन प्रमुख स्मारकों का परिचय :–

1. देवगढ़ के दसावतार मंदिर में विष्णु की शेषशायी मूर्ति है जिनके नाभिकमल पर ब्रम्हा स्थित है एवं चरणों के निकट लक्ष्मी बैठी है। आकाश में अनेक देवी–देवताओं को प्रदर्शित किया गया है।
2. पशु–बाराह के रूप में एक मूर्ति एरण से प्राप्त हुई है। इसमें बाराह के एक दांत पर पृथ्वी टिकी हुई है।
3. उदयगिरि गुहा की भित्ती पर विष्णु के वराह अवतार की विशाल मूर्ति उत्कीर्ण की गई है। बराह की इस विशाल मूर्ति को पृथ्वी का उद्धार करते हुए दिखाया गया है। रूप तथा मुद्राओं की अवधारणा ने इन मूर्तियों को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है।
4. गुप्तकालीन ग्वालियर के निकट उपलब्ध सूर्य की मूर्ति शांति तेज और प्रताप का प्रतीक है। विशाल और बलिष्ठ सूर्य देवता प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराते हुए अपने भक्तों की ओर देख रहे हैं और अपना दाहिना हाथ उठाकर आर्शीवाद दे रहे है।

5. वेसनगर से प्राप्त गंगा का फलक अत्यंत सुंदर है।

इसके अतिरिक्त :–

6. भूमरा का शिव मंदिर।
7. तिगुंवा का विष्णु मंदिर।
8. नचना कुठारा का पार्वती मंदिर।
9. सांची का मंदिर।
10. उदयगिरि की गुफाएं।
11. वाघ की गुफाएं।
12. पिपरिया का विष्णु मंदिर।
13. भरहुत का स्तूप के साथ।
14. भर्तुहरि की गुफाएं दर्शनीय हैं।

उपरोक्तानुसार स्मारकों के 4 नाम एवं स्थान लिखने पर 2 अंक एवं तीन पर विस्तार से लिखने पर 3 अंक 2+3 कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 20. आंग्ल फ्रांसीसी युद्ध मे अंग्रेजों की सफलता के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **अंग्रेजों की व्यापारिक तथा आर्थिक स्थिति का श्रेष्ट होना** :– भारत में अंग्रेजों की व्यापारिक तथा आर्थिक स्थिति फ्रांसीसियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। अंग्रेज सामान्य विस्तार के साथ–साथ व्यापारिक विकास पर भी ध्यान देते थे। इसके विपरीत फ्रांसीसी व्यापार विकास की अपेक्षा राज्य विस्तार को अधिक महत्व दे रहे थे। इस नीति के परिणाम स्वरूप ही फ्रांसीसी अंग्रेजों का सामना नहीं कर सकें।
2. **यूरोपीय राजनीति में फ्रांसीसियों का उलझना** :– जिस समय भारत में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य संघर्ष चल रहा था उस समय फ्रांस यूरोप मे अनेक देशों से युद्ध में व्यस्त था परंतु इस समय इंग्लैण्ड यूरोपीय युद्धों से दूर था अतः वह भारत में अपने संघर्ष को उचित ढंग से संचालित कर रहा था। फ्रांसीसी यूरोप में उलझे रहने के कारण भारत में अपने संघर्ष का संचालन ठीक प्रकार से नहीं कर सकें।

3. **अंग्रेजों का उच्चकोटि का सैनिक संगठन :–** अंग्रेजों का सैन्य संगठन फ्रांसीसियों से कहीं उच्चकोटि का था। अंग्रेजों के सैनिक वीर तथा साहसी होने के साथ–साथ अनुशासित तथा कर्तव्यनिष्ठ थे।
4. **अंग्रेजों की शक्तिशाली नौ सेना :–** फ्रांसीसियों की अपेक्षा अंग्रेजों की नौ सेना कहीं अधिक शक्तिशाली तथा कारगर थी। अंग्रेज अपने युद्ध जलपोतों से फ्रांसीसी रसद लाने वाले जलपोतों को नष्ट कर देते थे।
5. **विलियम पिट की नीति** :– इंग्लैण्ड के युद्ध मंत्री पिट ने सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांसीसियों को इस प्रकार उलझाए रखा कि वे भारत की ओर ध्यान नहीं दे सके तथा न ही सैनिक सहायता भेज सके।
6. अंग्रेजों की बंगाल विजय :– बंगाल की विजय द्वारा भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य की नीव दृढ़ हुई क्योंकि एक धन संपन्न तथा उपजाऊ प्रान्त अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। यहां उन्हें धन तथा सैनिक सरलता से मिल जाते थे। फ्रांसीसियों के पास इस प्रकार कोई प्रदेश नहीं था।

6 अंक

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं का विस्तार दिये जाने पर 6 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

प्लासी का युद्ध 25 जून 1757 ई. में हुआ था। इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **सिराजुद्दौला का अनिश्चित उत्तराधिकार** :– अलीवर्दी खां के तीन पुत्रियां थी परंतु पुत्र एक भी नहीं था। अलीवर्दी खां ने अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। अतः उसकी अन्य पुत्रियों तथा उनके पुत्र उसके विरोधी हो गये। अलीवर्दी खां. के स्वर्गवास के पश्चात उसकी पुत्री घसीटी बेगम गद्दी प्राप्त करने का प्रयास करने लगी। अंग्रेजों ने भी इस संघर्ष का लाभ उठाने का प्रयास किया।

2. **अंग्रेज तथा हिन्दू व्यापारियों का गठबन्धन :–** अंग्रेज हिन्दू व्यापारियों से संपर्क स्थापित कर उन्हें आश्वासन दे रहे थे कि यदि बंगाल की बागडोर उनके हाथों मे आ जायेगी तो उन्हें अनेक व्यापारिक सुविधाएं देंगे।
3. **व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग :–** कंपनी के अधिकारियों ने व्यापारिक अनुमति पत्र भारतीय व्यापारियों से रिश्वत लेकर उन्हें बेच दिये थे। भारतीय व्यापारी भी मुक्त व्यापार करके सरकार की आय पर आघात करने लगे। इससे सिराजुद्दौला को गहरा आघात लगा। फलस्वरूप उसकी आर्थिक दशा दयनीय हो गई।
4. **सिराजुद्दौला के विरोधियों को अंग्रेजों की सहायता :–** बंगाल में अलीवर्दी खां के काल में ही यह अफवाह फैल गई थी कि अंग्रेज सिराजुद्दौला के विरूद्ध घसीटी बेगम का समर्थन कर रहे है। अतः सिराजुद्दौला के ह्रदय में अंग्रेजों के विरूद्ध शंकाएं तथा कटुता की भावनाएं उत्पन्न होने लगी।
5. **अंग्रेजों द्वारा किलेबन्दी करना** :– अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से संघर्ष करने के लिये बंगाल मे किले बन्दी आरंभ कर दी थी। सिराजुद्दौला ने किलों को गिराने का आदेश दिया परंतु अंग्रेजों ने इस आदेश की अवहेलना की। इससे अंग्रेजों और सिराजुद्दौला के मध्य मतभेद और बढ़ गया।
6. काल कोठरी (ब्लैक होल) की घटना :– सिराजुद्दौला ने अनेक अंग्रेज बन्दियों को एक तंग कोठरी में बंद कर दिया था। दम घुटने के कारण अनेक अंग्रेज बन्दी मर गये। यह घटना ही **''काल कोठरी''** के नाम से प्रसिद्ध है। इस घटना को सुनकर मद्रास के अंग्रेज अधिकारी भड़क गये तथा उन्होंने 1756 ई. में कलकत्ता पर अधिकार कर लिया।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं या अन्य बिन्दुओं पर विस्तार देने पर कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 21. महात्मा गांधी ने निम्नलिखित परिस्थितियों तथा कारणों से असहयोग आन्दोलन को आरंभ किया था :–

1. **प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम :–** प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने यह घोषणा की थी कि भारत मे स्वशासन संस्थाओं का विकास किया जायेगा। उन्होंने यह घोषणा की ''यह युद्ध लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ जा रहा है'' परंतु युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने अपनी घोषणाओं सिद्धांतों की उपेक्षा की। जिसकी वजह से असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया।
2. **1917 की रूसी क्रांति :–** महात्मा गांधी को कुछ तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने भी प्रभावित किया था। 1917 ई. में रूस में एक व्यापक क्रांति हुई जिसके कारण भारत की जनता में भी जागरूकता आई और असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया।
3. **रॉलेट एक्ट :–** इस आन्दोलन को आरंभ करने का प्रमुख कारण रॉलेट एक्ट था। इस एक्ट के द्वारा किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता था तथा कानूनी कार्यवाही किये बिना दीर्घकाल के लिये नजरबन्द रखा जाता था। इस एक्ट का उद्देश्य राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलना था जिसके विरोध में गांधी जी से असहयोग आंदोलन शुरू कराया।
4. **1919 का अधिनियम :–** ब्रिटिश सरकार ने 1919 के अधिनियम द्वारा द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना की थी। इसमें साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली द्वारा हिन्दू तथा मुसलमानों में फूट डालने का प्रयास किया गया जिसके विरोध मे गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया।
5. **जलियां वाला बाग हत्याकांड :–** रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में जलियावाला बाग में एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। जिसमें जनरल डायर ने बाग को घेरकर बिना चेतावनी दिये निहत्थी भीड़ पर गोलियां चलाई गई जिससे 1000 व्यक्ति मारे गये तथा

1600 घायल हो गये। इस कारण गांधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया।

6. **अकाल तथा महामारी :–** 1917 ई. में पर्याप्त वर्षा न होने से देश में व्यापक अकाल पड़ा। इस समस्या का सरकार कोई उपाय नहीं कर रही थी जिससे जनता भूखों मरने की कगार पर आ गई। अनेक प्रकार के संक्रामक रोग भी फैल गये जिससे जनता परेशान होकर गांधी जी के साथ असहयोग आंदोलन में शामिल हो गई।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं एवं अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

भारत छोड़ो आन्दोलन की असफलता के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **संगठन तथा निश्चित योजना का अभाव :–** भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ करने से पूर्व महात्मा गांधी ने इसकी कोई स्पष्ट योजना नहीं बनाई थी। अर्थात् किसी भी आंदोलन कारी को यह ज्ञात नहीं था कि उन्हें क्या करना है। इस कारण यह आंदोलन असफल रहा।
2. **ब्रिटिश शासन का शक्तिशाली होना :–** इस आंदोलन का प्रमुख कारण ब्रिटिश शासन का अधिक शक्तिशाली होना तथा आंदोलनकारियों के पास धन व अस्त्र–शस्त्रों का अभाव था इस कारण अंग्रेजी सेना ने इसे असफल कर दिया।
3. **राष्ट्रीय नेताओं को बन्दी बनाया जाना :–** इस आन्दोलन के कारण ब्रिटिश शासन ने भारत क अनेकों राष्ट्रीय नेताओं कोबन्दी बना लिया था। जिसके कारण अन्य आंदोलनकारियों को उचित मार्गदर्शन देने वाला कोई वरिष्ठ नेता न होने के कारण यह आंदोलन असफल रहा।

4. **मुस्लिम लीग की राजनीति :–** मुस्लिम लीग ने मुसलमानों को आंदोलन से पृथक रहने का परामर्श दिया जिससे मुसलमानों ने आंदोलन में भाग नहीं लिया। इससे भी आंदोलन असफल रहा।
5. **कठोर दमन चक्र :–** ब्रिटिश शासन ने इस आंदोलन को अत्यंत क्रूरता तथा कठोरता के साथ दमन किया। ब्रिटिश सेना ने लाखों व्यक्तियों को बन्दी बनाया तथा हजारों को गोलियों से भून दिया। जिसके कारण जनता में यह आंदोलन सफल नहीं होने दिया।
6. **साम्यवादी दल का अलग रहना :–** साम्यवादी दल ने इस आंदोलन से अपने को पूर्णतया पृथक रखा। क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड तथा रूस दोनों मिलकर जर्मनी तथा जापान की फासिस्ट शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष किया था। ऐसी दशा में भारतीय कम्युनिस्ट रूस के मित्र ब्रिटेन का विरोध नहीं करना चाहते थे। अतः उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन से अपने को दूर रखा।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

– – – – –